देपारी

(हल्बी हाईकू एवं कविता संग्रह)

शकुंतला तरार

टेपारी

(हल्बी हाईकू एवं कविता संग्रह)

शकुंतला तरार

प्रकाशक

नारी का संबल

टेपारी
(हल्बी हाईकू एवं कविता संग्रह)

लेखिका
शकुंतला तरार

प्रकाशक :
नारी का संबल
प्लॉट नं. 32, सेक्टर-2, एकता नगर,
गुढ़ियारी, रायपुर (छ.ग.) पिन - 492 009
फोन : 0771-2592194

मुद्रक :
महावीर ऑफसेट
गीतानगर, रायपुर (छ.ग.)
फोन : 0771-2255140

अक्षर संयोजन :
क्रियेटिव कम्प्यूटर
तात्यापारा, रायपुर (छ.ग.)
मो. : 9329111036

प्रकाशन :
मूल्य : 50 रु.

कुछ अपनी बात

धानी धरती छत्तीसगढ़ का वनवासी अंचल बस्तर जहाँ की 80 प्रतिशत जनता अभी भी गांवों में निवास करती है, नृत्य और संगीत उनका जन्मजात गुण होता है, जो उनके तन-मन में बसा होता है । उसी बस्तर की एक प्रमुख सम्पर्क बोली है हल्बी । आज जब हम अपने राष्ट्र की भाषा हिन्दी में अंग्रेजी का धड़ल्ले से प्रयोग कर रहे हैं, छत्तीसगढ़ी भाषा में हिन्दी और अंग्रेजी का प्रयोग हो रहा है तो स्थानीय बोलियां कैसे अछूती रह सकती हैं। अतः आज हजारों शब्द जो हमारी बोलियों के हैं विलुप्त होने के कगार पर हैं । आनी वाली पीढ़ी को शायद अन्तर करने में कठिनाई महसूस हो । उसी हल्बी में मैंने हाईकू लिखे हैं जिनमें से 100 हाईकू और कुछ कविताओं को एक पुस्तक का आकार प्रदान करने का यह मेरा छोटा सा प्रयास है जिसके माध्यम से मैं बस्तर से दूर होते हुए भी अपनी माटी, अपनी संस्कृति के साथ जुड़ाव बनाये रख सकूं ।

पीछे मुड़कर देखती हूँ जब भी, एक पल को मन खुशियों से भर उठता है खुद को बच्ची की तरह और पूरे परिवार को एक साथ देखती हूं । तब जी चाहता है क्या वे पुराने दिन फिर से कभी लौट पायेंगे ? पर क्या गया समय भी कभी लौटकर आया है । माता-पिता चले गये, भाई-बहन सबके परिवार अपने-अपने हाँ मगर इन्हीं अपने, परिवार के बीच बैठकर ही तो मैंने जीवन के कुछ अनमोल क्षणों की जीया है जिन्हें समय-समय पर लेखनी के माध्यम से कागज के पन्नों पर उतारती रहती हूं यह वह धरोहर है जिसे संजोकर मैंने रखने का प्रयास किया है यह वह धन है मेरे लिए कि जिसे मैंने संभालकर संदूक में रखा है और जिस भाषा बोली को मैंने जीया उसी भाषा बोली. में संदूक का टेपारी नाम धन्य किया गया है । आशा है टेपारी लोगों के दिलों तक अवश्य पहुँचेंगी । हल्बी में कुछेक शब्द ऐसे होते हैं जो एक ही शब्द अलग-अलग भावों में अलग अर्थ देते हैं ।

(1)

बस्तर मचो
सरन आया बूबा
दंतेसरी जै

सियान आय
बिसवास करलें
ठगून[1] दिला

मांडी[2] टेकून
डंडा सरन लागें
बला देवता

सहरे लोग
बलतो[3] आरू करतो
काय बलासे

---

1. बेवकूफ बनाना, 2. घुटनों के बल, 3. कथनी और करनी ।

(2)

काय सांगेंदे[1]
टोंडे[2] हाड़ा नी आय
इथा चो लोग

दंतेसरी जै
बूतली काय साद[3]
दसराहा चो

खमोरी होली[4]
एदांय दसराहा
सरकार चो

लूगा घेनूक[5]
सीखली एदांय रे
नोनी बेलोसा

---

1. क्या बताऊँ, 2. बिना हड्डी की जबान, 3. शौक खतम होना, 4. व्यक्तिगत
5. वस्त्र खरीदना ।

(3)

कितरो इला [1]
आपा पूती झीकून [2]
मंजा करला

मुरिया हाते
हुनचो बस्तर के
नंगाला एदे [3]

मनुख मारा
मनुख ले आगर
केभय नांई [4]

राज बनली
लिंगोटी हजलो[5] ने
काय चो राज

---

1. कितने आये, 2. जिसे जो मिला खींचा, 3. छिन लिया
4. कभी नहीं, 5 गुमहोना ।

(4)

अये मंगलू
तूय नी अफारसे [1]
भात मिरेदे

भगवान के
दखलेंसे लागली
तूके दखून

माटी चो देहें
मिसून[2] जाउ आय
माटी चे ठाने

मनुख चेते[3]
जाले काय काज तो
मनुख मारा

1.अफसोस न करना, 2. मिल जाता है , 3. मनुष्य चैतन्य हो तो ।

(5)

ठगरी[1] रले
भनभना मांडेसे [2]
बूता भयना

माटी किरिया
काके[3] भावलीस रे
बिहा करेंदे

आया रे आया
तूचो सूरता इले
नी अफारेंदे[4]

आगे जुग ने [5]
रथ ने चघे राजा
एबे मंतरी

---

1. आलसी, 2. गंदा पड़ा रहना 3. किसे पसंद आई
4. दुखी नहीं होना 5. पुराने समय में ।

(6)

घानी पेरतो
आंइख ने टोपा ना
कसन काजे

माटी किरिया
तूयचे मचो धनी
संगे रहेंदे

माटी किरिया
पूइतनास[1] गेली
खमन रान[2]

माटी किरिया
मुरिया के ठगला
सहरिया रे

---

1. नष्ट हो गया, 2. वन ।

माटी किरिया
नानी बुधी मनुख
रहे नानी चे

माटी किरिया
धान चो कटोरा ने
ओंडकी[1] सूखा

माटी किरिया
आमचो नोनी, गीता
पढ़ूक जाने

माटी किरिया
नी पढ़लो मनुख
सोजे भकवा[2]

---

1. आंत सूखना, 2. बुध्दू ।

उलार होले
पूरे जातोर आय
नाहाले[1] टेंढा

मनुख जीव
कसटकारी आय
डंडकी[2] गागे[3]

साहारे गेले
ठेगला मसका जे
मनुख झोप[4]

लाडू होली से
बस्तर चो राज
गोप[5] करासे?

---

1. नहीं तो, 2. क्षण में, 3. रोता है, 4. भीड़, 5. लीलना ।

(9)

मोटोर चघा
ओड़गोड़सत[1] तो
बस्तरिया के

सांज होतो के
चिड़ई चिंड़गुर
फिरुन[2] गेला

जीवना बोझा
बलतो बीता मन
माटी चो बोझा

माटी किरिया
माटी चो लागमानी
नीको[3] लागेसे

---

1. घसीटना, 2. वापसी, 3. अच्छा लगना।

हरीक होये
बाजा बाजले बाबू
कुमधुड़का[1]

लाज आमचो[2]
बस्तरिया गाहना
कपड़ा बले

पारद[3] करूं
कयरी बयरी के
मिरगा[4] नांई

जतरा[5] होले
झोकाऊक पड़ेसे
पूजा देउक

---

1. गदगदाना, 2. लाज हमारा, 3. शिकार करें
4. हिरन नहीं, 5. दैवीय अनुष्ठान ।

चुहकसत[1]
बस्तरिया मन के
सौकार मन

बस्तरिया
चेता कसन नांई
बूतेदे नाव[2]

गुर चिंवड़ा
संस्कृति आमचो
नी नसावासे[3]

आरसा रांधा[4]
सगा जातोर आय
नी भूलका नू

---

1. चूसते हैं, 2. नाम गुम जाएगा
3. नष्ट मत करियेगा, 4. अनारसा पकाइये ।

आमचो[1] बेटी
बचाऊन के राखा[2]
मंद चाखना

धका धूमड़ी[3]
मनुख काय आय
आइगकाड़ी[4]

मोडराउन[5]
दुहारसत लोक[6]
दखते रऊं

लंदी-फंदी के
काय करूंदे आमी[7]
मुरिया पीला

---

1. हमारी, 2. बचाकर रखें, 3. धक्कामुक्की, 4. बंदूक
5. एकत्रित करके, 6. लोग लेकर चले जा रहे हैं, 7. हम क्या करेंगे ।

सिरहा मांझी
बूढ़ादेव आमचो
भाइगमानी[1]

घोटुल गोठ[2]
किताब ने पढूंदे
आमी मुरिया

राज बनली
बाढ़सत एदांय
मनुख मारा

माटी चो देहें[3]
कुमार[4] चो हांडी
लोहरा घन

---

1. भाग्यवान, 2. घोटुल की बातें, 3. मिट्टी की देह, 4. कुम्हार ।

काय उवाट[1]
बस्तर होयसे रे
सतयानास

विकास गोठ
बुकलत साहेब
ढोल चो खोल

गोंड मुरिया
चिचका कुड़िया ले
झीकना पाटा[2]

बस्तरिया
करम के ठटाये
काहां रऊंदे

---

1. उपाय, 2. अंगवस्त्र ।

नानी इदलो[1]
संगाये टेपारी ने
सियानी गोठ

घूस मूसा[2] चो
चाखना, गोंड टोंड
सहराये से

लिंगोटी मारा
जहाज ने चेघेसे[3]
पदून भाती

छत्तीसगढ़
इथा चो धन माल
खमोरी[4] होली

---

1. छोटा बच्चा, 2. जंगली चूहा, 3. चढ़ता है, 4. व्यक्तिगत ।

लुदरू गांडा
लुद-लुद हालेसे
पंडरी डांडा[1]

सोमारू उठ
चघोड़ी[2] धरून जा
मछरीधरा

मंगलू उठ
किताब उघड़ाव
पढ़ूक सीख

आमा महुड़[3]
पींवरे पींवर जे
नोनी चो भाग

1. सफेद गन्ना, 2. बांस का बना मछली पकड़ने का छोटा उपकरण
3. आम्र मंजरी ।

अंडखा चेपा[1]
कितरो दिन हांडा[2]
पिला पढ़ावा

हजूंदे जानू[3]
मनुख मारा होला
आमचो राज

बायले मन
किताब के पढ़ूक
केब सिखवां?

आमचो राज
नवा नवा मनुख
काहां जावां बे?

---

1. अंगूठा छाप, 2. लाड़ला या लाड़ली 3. गुम हो जायेंगे ।

मनुख मारा
जितून गेलासत[1]
पुलुस बल

पुलुसेदखा
मनुख मारा दखा
आमचो डंड

एदांय जाले
टूंडी कनकी[2] बले
भाइगमानी

राहुड़ दल
ओयलदे[3] राज ने
नसेदे भाग

1. ज्यादा हो चुके हैं 2. चावल के छोटे टुकड़े 3. आयेंगे (अतिक्रमण)।

बिकास गोठ
लबका टोंडया चो[1]
खातो उवाट

बारामासी बे
खमनखमन ने
बुलतो डंड[2]

आइगकाड़ी
टेकाउन देसत
लदलदूंसे[3]

आगे जुग ने
भूमकालया[4] होला
एदांय कोन

---

1. बड़बोले के लिए, 2. घूमने में तकलीफ होना,
3. थरथराना, 4. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ।

गोहड़ी[1] एदे
ओयलून बिटादे[2]
चेतून राहा

तेलीन सती[3]
सत दखाउआय[4]
मनुख मारा

टडमहीन[5]
साहार चो बायले
बाचून राहा

हाय धनी रे
पीला दोंदों लाडरी[6]
पूइतनास[7]

---

1. जानवरों का झुण्ड, 2. घुसकर तंग करेंगे, 3. एक देवी का नाम
4. दिखाती है, 5. घमण्डी, 6. नन्ही प्यारी लाड़ली, 7. नष्ट होना ।

संगवारी रे
बिसवास करलें
भटावलास[1]

परदेसी रे
बिसवास करलें
कपट होली

पर राजी चो
बिसवास नी करा
उतलो आत[2]

बस्तरिया के
भटाउन देसत[3]
गोठयाउन[4]

---

1. बुध्दू बना दिया, 2. घमण्ड से इतराने वाले,
3. बेवकूफ बना देते हैं, 4. बातों-बातों में ।

पर राजी के
पतयाउ नोहांय[1]
एदांय मंय

गीद गोबिंद
नीको करासे तूमी[2]
उतलासीत[3]

नसाला[4] दादा
कसन बाचूंदे बे
पुदकसत[5]

नंगादे एबे[6]
जमाय जिनीस के
सावचेत हो

1.यकीन नहीं करुंगा, करुंगी, 2. अच्छा करना तुम,
3. अपने मन की करना किसी की बात न सुनना,
4. नष्ट करना 5. नोच रहे हैं, 6. छीनेंगे अब ।

दखूक भाये
उदलया परालो[1]
आमके काय

मरलो लोग[2]
खूबे सुरता अये
काय करासे

कनेर फूल
चघावा देव धामी
साहा होसत[3]

तेलीन सती
मावली, डोकरी जे
आमचो राखा[4]

---

1. बिना विवाह के युवक या युवती का भाग जाना, 2. जो मर जाते हैं
3. रक्षक होते है, 4. हमारी रखवाली करते हैं ।

उतलो[1] आय
टेड़गी मुंही लेकी[2]
बाचलें मंय

बड़े बनूक
काय ठगूक सीखूं
नंगत आसूं[3]

पर राज चो
जे लबका टोंडया[4]
हरीक मन

नक्सली तुमी
गुपाउन दिलास[5]
भय चो राज

1. घमण्डी, 2. टेढ़ी मुंह वाली लड़की, 2. हम ठीक हैं,
3. बड़बोले, 4. भ्रमित कर दिया या गुमराह कर दिया ।

सुकसी टांडी
जे चिपटा चो नोन
सरली गोठ[1]

गोठ पुरली[2]
पतयावासे जाले[3]
फेर अयेंदे[4]

लोक जुहले[5]
नंगत होली गोठ
जांवा-जांवा री[6]

गोठ ने गोठ[7]
गोठकारया दादा[8]
पूरली गोठ[9]

---

1. बात समाप्त हो गया, 2. बात पूरी हुई, 3. यकीन करें तो,
4. फिर आऊँगी, 5. जमा होने पर, 6. चलो चलें सखी,
7. बातों बातों में, 8. बातूनी दादा, 9. बात पूरी हुई ।

कविताएँ

डूरका

राती

गाय गोरू नरियावला[1]

कोठा भीतरे ले

धरारपटा[2] भीर-भार उठला

डूरका इली, डूरका इली, डूरका इली

तुरते ठका-ठकी[3]

ठेंगा, फरसा, टंगिया

कंदील धरून

कोनी टारच धरून निकरला

घर ले

डूरका कोठा ने पुडरा[4] पीला के

धरूक[5] एउन रहे

मांतर

मनुख चेतला[6] बलून

खमन[7] भीतरे परावलो[8]

---

1. चिल्लाने लगे, 2 अतिशीघ्रता से, 3 ठोककर आवाजें निकालना,
4 बछड़ा 5 पकड़ने 6 जागना, 7 जंगल 8 भागना ।

मंझन दांय[1]

गोटोक मनुख इलो [2]

बेलोसा संगे हांसून-हांसून

काय-काय गोठयावलो

दखू-दखू गुलाय मंझने

बेलोसा हजली[3]

गांव कारी बिचारसत

डूरका नंगत काय मनुख ?[4]

डूरका चो डर आगर

काय

साहरिया मनुख चो डर।

---

1 दोपहर के वक्त, 2 एक आदमी आया,
3 बेलोसा गुम हुई, 4 शेर अच्छा की आदमी ।

मोटोर इली

आजी दिने मंय हरीक होलें
मचो गांव चो भीतरे
पींर - पांर, घूंर-घांर करतो बीती
मोटोर इली
मोटोर एते साट
हुनचो भीतरे ले
सियान सजन
पिला जुबान
धंगड़ी-धंगड़ा[1]
कितरो झान उतरला
आरू
कितरोय झान फेर चेघला
गोटोक मनुख जेके कंडेकटर बलसत
पींर्र्र्र्र नाय ले सीसकाड़ी पाड़े[2]
तेबे हुन मोटोर थेबे बले आरू रेंगे बले
हरीक होउन[3] गुलाय मनुख
झोप होउन
दखून दखून
हरीक होवत
मंय बिचारें मचो हरीक आगर[4]
काय दूसर चो हरीक आगर ?

---

1. युवक-युवती, 2. सीटी बजाना, 3. खुश होकर, 4.खुशी ज्यादा ।

छू गदबद

झुलपुल होते रहे
टाटी[1] ने अड़गड़ा के टेकाउन
खोली भीतरे
हुन जंगल साहेब
भात रांधते रहे
नवा-नवा इलोसे इथा
साहेब बनून
खमन चो नांव ने डरे
डंडीक रहून[2]
खूड़खाड़-खूड़खाड़ अड़गड़ा[3] करली
टाटी चो पोलका ने हुन दखलो
गोटोक भालू
टाटी उघाड़तो उवाट[4] करे
जंगल साहेब पीकड़-पाना[5] असन लेहराये
दूसर दिने हुन दखली
कुड़िया चो टाटी उघड़ा
भीतरे कांई नी आय
जंगल साहेब लेंडी बांडा[6] पराउन रहे।
छू गदबद।

---

1. लकड़ी या बांस का दरवाजा, 2. कुछ देर पश्चात
3. दरवाजे पर फंसाने की मोटी लकड़ी,4. उपाय, 5. पीपल का पत्ता,
6. हास्य सूचक शब्द ।

झोप[1]

खमन रान चो कठा

रली

मचो नानी इदलो गांव

ओसार-ओसार खोर[2]

आरू

ओसार-ओसार सार[3]

बांगा बाड़ी ने चुंआ टेंढा

एदांय

काहां गेली जाले हुन

इथा तो

नानी-नानी सपटलो बाट[4]

गुलाय ठेगला-ठेगली झोप[5]

दूय डांहका रेंगले

ढींर-ढांर, पींर-पांर, टिंरिन-टिंरिन

चेपी होतो[6] चो खूबे डर

---

1. भीड़, 2. चौड़ी-चौड़ी गली, 3. चौड़े-चौड़े आंगन, 4. संकरे रास्ते
5. धक्का मुक्की करती भीड़, 6. दब जाना ।

केभे होली

आरू

कसन उलटली[1]

मचो ''नानी इदलो''[2] गांव

साहार,

गम नी पावलें[3]

मयं,

काहां गेली ओसार-ओसार, सार, खोर

मके लागली

मयं ''लिमकी मारलें''[4]

आरू

झोप बाढ़ून गेला

झोप संगे संग

मचो ''मयं'' बले

हजली[5] ।

---

1. कब परिवर्तन हुआ, 2. छोटा सा, 3. मुझे पता नहीं चला
4. पलक झपकते ही, 5. गुम हो गया ।

जोगनी

जोगनी[1]
बरे से
बूते से
आंइख चो भरम आय
काय सत्ते[2] आय
मनुख बले हुसने
केभय बूते से[3]
केभय बग करे से[4]
गुलाय संवसार ने[5]
नाव हुनचो
मांतर[6]
बरलो पाछे हुन बूतेसे बले
काय
जोगनी
बूततो सती
असन उवाट[7] करे
कि हुन
सरगन तारा[8] बनून जावो।

---

1. जुगनू, 2. सचमुच, 3. कभी बूझता है,
4. कभी चमकता है 5. पूरे संसार में, 6. मगर,
7. उपाय, 8. आकाश में टिमटिमाता हुआ तारा ।

बेरा उदली[1]

पंडकी[2] करला चींव-चांव
मुचमुच हांसते सुरूज दादा दखेसे
एवं[3]
कि हेवं[4]
आया उठली
दुवार के बढ़ाली
गोबर घोरून[5]
छड़ा दिली
आधो के फयले बाटे
लगे-लगे सरावली[6]
बूबा उठलो
टंगया धरून खमन गेलो
आनलो[7]
झिटका किटका के
आईग बारली[8]
आया
चुढ़ाली पेज
आरू
सेमी सोला चो आमट
बूबा खदलो[9]
पाछे गेलो[10]
बेड़ा बाटे।

---

1. सूर्योदय, 2. पंछी, 3. इधर, 4. उधर, 5. घोलकर, 6. आसपास में लीपती है 7. लाते हैं, 8. आग जलाती है, 9. पिता खाते हैं, 10. बाद में वे जाते हैं ।

गेदूर

बड़ रूख चो ऊपरे
गेदूर[1] चो झोप
खिरांव-खिरांव
किंजरून[2] भाती
उल्टा-उल्टा टंगाई होसत
जाले कोनी
किंजरतेच्च रसोत
टोंडे[3]
खाउन भाती
उगालू आत[4]
हुन
गोटकी जीव आत
जे चो
निस्तारी नांई
टोंडे खाउन
टोंडे उगालोत
हुसने
आजी चो मनुख
जे थारी ने खासोत
हुनी थारी ने
उवाट[5] करून देसोत।

---

1. चमगादड़, 2. घूमकर, 3. मुंह से
4. उगल देना खाया हुआ, 5. उल्टी करना ।

खमन

घाम के दखून
गुलाय मंझने
बिचारेसे[1] बुदरू
आगे रली खमन, खमन जसने
सरगी पाना चो छांय[2]
महुं, आमा जो छांय
एदायं होली टंगटंगा[3]
खमन
आमचो
जीवना रली
आनी-बानी चो जिनीस मिरे
एबे
दखतो आय
बिनतो[4] आय

---

1. विचार करता है, 2. 'साल पत्तों की शीतल छाया
3. उजाड़ होना, 4. उठाना है ।

मिसतो आय[1]
कुटतो आय[2]
मांतर[3]
जमाय के
बेपारी मन के
सोपुन दे तोर आय
खातो काजे
ना ठोवतो[4] काजे
फकत दखतो काजे ।

---

1. मसलते हैं, 2. कूटते हैं, 3. मगर 4. रखने के लिए ।

घोड़ोंदी[1]

अमूस[2] इली
मान्तर
एबे ले घोड़ोन्दी नी बनावलेंसे[3]
कसन काजे
कि नवा ठेंगा नी आनलेंसे[4]
खमन गेले
साहेब मन कुदाउआत[5]
बूटा-बूटी के गोंदूक नी देत[6]
खमन के नी उजड़ाव बलसत
मान्तर
नी गेले
कसन बनेदे घोड़ोंदी
इतरो दिन ले
आमी रलूं खमन भीतरे चो मुरियापीला
आमचो रली खमन रान
हरीक-उदीम ने रते रलूं[7]
आरू
आजी मनुख चो झोप बाढ़ली रे दादा

---

1. गेड़ी, 2. अमावस्या, 3.बनाया हूँ, 4. नहीं लाया हूँ, 5. भगाते हैं,
6. लकड़ी काटने की मनाही है, 7. हंसी खुशी से रहते थे ।

खमन चो खमन रान
बांडा होउन जायसे राता-राती[1]
गम नी जानोत साहेब मन,
ऊपरे चो मन जुगे जानसत काय
तेबे
आमके गोंदूक नी देवत
कसन बनेदे घोड़ोंदी मचो
कसन बाचेदे हामचो आदिवासी संस्कृति
तीज-तिहार
संस्कृति के बचाऊन राखूं
काय
खमन के बचाऊँदे
काय
मनुख्र के बचाऊँदे
चेत गुपली[2]
मयं मुरिया चो ।

---

1. उजाड़ हो जाता है रातभर में ही, 2. दिमाग का काम नहीं करना ।

थाहा

हामी चुढ़ूंसे[1]
अंदन चुढ़तो बरन चो[2]
चुहकते[3] रला हामके
लोढ़िया आमा बनाऊन
बोंग डांडा[4] बनाऊन
एदांय राज बनलीसे काय
आमचो
आमके काय काय मिरेदे
एके बले आमी जानूंसे जानूं
आमचो कुड़िया चो खदर बले एदांय नी बाचे
खमन चो जीनिस नी बाचे
आमी डबकूंसे[5]
आगी बारतो काजे लकड़ी नी हाय
उथा अदराती[6]
टरक भरून जायसे हुन सहरे बाट।
आमी दखूंसे भकपाड़ून[7]।

---

1 हम पक रहे हैं, 2 भात का पानी उबलना, 3 चूसना, 4 गन्ना
5 हम खौल रहे हैं, 6 आधी रात को, 7 आश्चर्य से ।

बूटी (नन्हीं)

बूटी हांडा
फकत घोंडरते[1] रहेसे
कुधुर[2] ने
जूड़ी[3] चो दिन
पांय हात सोजे चड़पा-झूमली[4]
केभय जायसे राहेड़ बूटा खाले
केभय तिल-पेटतो लगे
हेंडस[5] करून खाई-घोंडरून गागे[6]
आया अये
दोंदो के कोरा ने धरे
चोकस्स नांय ले टोंड के चूमे
आरू
भीतरे नेऊन
संगालो[7] केसूर[8] के
दूय ठान धराउन दये
बूटी हांडा हरीक होये
आया के सरग दीखे ।

---

1. जमीन पर लोटते रहना, 2. धूल, 3. ठंड, 4. धूल मिट्टी चिपकना
5. तंगकरना, 6. रोती है, 7. रखा हुआ, 8. एक कंद ।

आमी बस्तरिया

हामचो माय सांगे[1]
हुनमन नानी-नानी रहोत हुदलदांय[2]
मुंगुल दल इला, मुंगुल दल इला
बलून सांगत जाले
आमी लेकी लेका मन जमाय
खोली भीतरे लुकूं डर काजे
हुन हुरहा एवत
धरा-उड़मा[3] करत
कांई जांई के नसावत[4]
आरू
नंगाउन-नंगाउन नेवत
पाछे जानलूं हुन मुंगुलदल अंगरेज मन के बलत
एभे
राहुड़ दल एसत[5]
इथाय थेबसत[6]
बुलुन-बुलुन थाहा-धरसत[7]
हामचोय संग नंगत मीठ-मीठ गोठियावसत
पाछे
हामचोय जिनीस के मोडरासत[8]
हामचोय भूंय बाड़ी के
डराउन-डराउन घेनसत[9]
सवकार[10] होसत
हामके कमिया राखसत
आमी बस्तरिया ।

---

1. बताती थी, 2. उस समय, 3. छीना-झपटी, 4. नष्ट करते थे, 5. आते हैं
6. रूकते हैं, 7. जानकारी प्राप्त करते हैं, 8. अपने अधिकार में लेना
9. खरीदते हैं, 10 अमीर ।

घुमर

निनास[1] नी धरे

इंदराबती[2]

चमउस[3] होले

सनन-सनन, सींव-सींव करेसे

चितरकोट ने पाछे हुथा गिरेसे

घुमर[4] बनाउन

कितरोय मनुख उथा एसत

बारा महेना

मांतर चमउस दांय,

आरु दीआरी लग ले बले

खलखलाउन गिरेसे ।

एबे तो उथा

खूबे नंगत करुन दिलासत

बुलुक जाहा[5]

कांई-जांई, आनी-बानी चो खातो जिनीस

थेबतो[6] काजे बले सरकारी ठान बनालासत

एतो जातो काजे मोटोर चलेसे

---

1. सांस, 2. एक नदी का नाम, 3. चौमासा, 4. जलप्रपात,
5. आप भी घुमने जाईये, 6 रूकने ।

सेठ सवकार अपिसर मन
आपलोय मोटोर ने चघून-चघून एसत
हुता गेले[1]
आंईख लिमकी मारूक भूलकेसे[2]
पीला झीला मन पखना-पखना ने[3]
बुकलसत[4]
पानी छीचाछीची
किरली[5] पाडून
फोटो खिचासत
एक झान, दूय झान, झोप चो झोप
सकत भर दखसत
झुलपुल[6] होतो चो पूरे
फिरून जासत[7]
मंय तो जाते रहेंसे
तूमी बले जाहासे कसन ?

1. वहां जाने पर, 2. पलक झपकना भूल जाते हैं, 3. पत्थरों के ऊपर, 4.किल्लोल, 5. किलकारी, 6. संध्या समय, 7. लौट जाते हैं ।

नाम	–	**शकुंतला तरार** (कवयित्री)
जन्म स्थान	–	तहसील पारा, कोन्डागांव, जिला बस्तर (छ.ग.)
माता	–	स्व. श्रीमती जमुना देवी देवांगन
पिता	–	स्व. श्री रतनलाल देवांगन
पति	–	श्री टी.सी. तरार
पुत्र	–	संदीप तरार
पुत्री	–	श्वेता तरार
शिक्षा	–	एम.ए. (राजनीति शास्त्र), एल.एल.बी. पत्रकारिता में डिप्लोमा, लोक संगीत में डिप्लोमा, एम.ए. शास्त्रीय संगीत में अध्ययनरत।
प्रकाशित पुस्तकें	–	• 'बन कैना' छत्तीसगढ़ी गीत संग्रह • बस्तर की लोक कथाएं • बेटियां छत्तीसगढ़ की • बस्तर का कांतिवीर गुंडाधुर – खण्ड काव्य • घरघुंदिया – छत्तीसगढ़ी कविता संग्रह • चूरी – छत्तीसगढ़ी लघु नाटक
सम्मान	–	• मिनी माता सम्मान 2001 • छत्तीसगढ़ की प्रथम देवांगन महिला साहित्यकार सम्मान • प्रभावती सम्मान 2005 सुलभ साहित्य अकादमी दिल्ली • वरिष्ठ कवयित्री सम्मान–व्यंजना संस्था, रायपुर • वैभव प्रकाशन सम्मान, रायपुर • सुभद्राकुमारी चौहान रजत स्मृति सम्मान – 2006 हिन्दी भाषा साहित्य परिषद खगड़िया, बिहार
विधा	–	• हिन्दी, छत्तीसगढ़ी , हल्बी में समान रूप से कहानी, कविताएं, लेख आदि का निरन्तर लेखन एवं प्रकाशन । • लोक–संस्कृति में विशेष रूचि ।
संपादन	–	• बिहनिया (संस्कृति विभाग छ.ग.शासन की पत्रिका) • नारी का संबल (त्रैमासिक पत्रिका)
सम्प्रति	–	स्वतंत्र पत्रकारिता
स्थायी पता	–	प्लॉट नं. 32, सेक्टर 2 एकता नगर गुढ़ियारी रायपुर (छ.ग.) दूरभाष – 0771-2592194, मोबाईल – 94255-25681